Topic 2:- अरस्तू: आकार, द्रव्य एवं कारणता

अरस्तू का कारणता सिद्धान्त:-

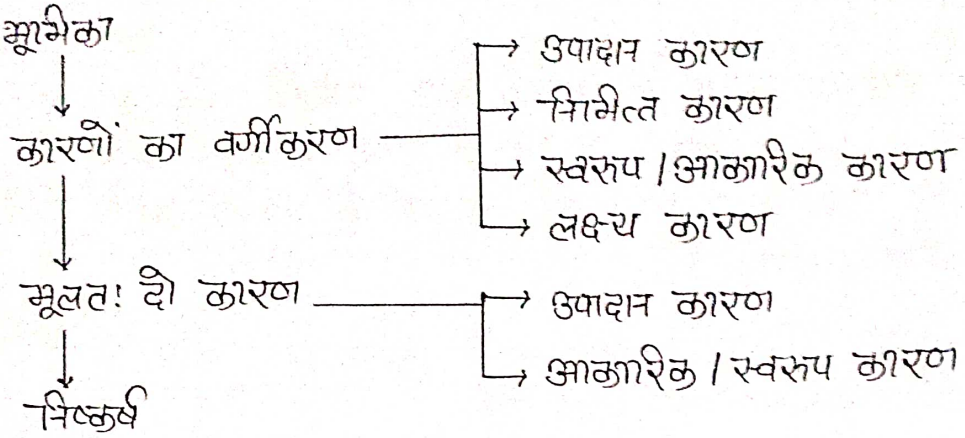

प्लेटो की तुलना में अरस्तू की प्रवृत्ति अन्य जगत की अपेक्षा अपने जगत / भौतिक जगत की व्याख्या करने में अधिक थी। सम्भवत: इसी कारण कुछ विचार प्लेटो की तत्वमीमांसा का काल्पनिक एवं अरस्तू की तत्वमीमांसा को वर्णनात्मक कहते हैं। भौतिक जगत की व्याख्या में कारणता सिद्धान्त की केन्द्रीय भूमिका है। अरस्तू जगत में हो रहे परिवर्तनों का कारण खोजने का प्रयास करते है। अरस्तू का कारणता सिद्धान्त मौलिक एवं व्यापक है। इसमें प्रत्येक घटना या परिवर्तन की 4 कारणों का संयुक्त परिणाम बताया है। ये चार कारण निम्न हैं-

① उपादान कारण
② निमित्त कारण
③ स्वरूप / आकारिक कारण
④ लक्ष्य कारण

Note → प्लेटो के दर्शन में 3 कारणों- निमित्त (ईश्वर), उपादान (जड़), आकारिक (प्रत्यय) की स्पष्ट चर्चा की है।

① उपादान कारण:-

उपादान कारण वह पदार्थ है जो कार्य में परिणत होता है। जैसे- मेज के निर्माण में लकड़ी उपादान कारण है। उपादान कारण जड़ हो यह आवश्यक नहीं है क्योंकि किसी सम्प्रत्यय के निर्माण में विचार भी उपादान कारण हो सकता है।

③ निमित्त कारण :-

निमित्त कारण वह है जो किसी परिवर्तन / कार्य के लिए आवश्यक गति प्रदान करता है। जैसे- घट निर्माण की प्रक्रिया में कुम्हार निमित्त कारण है। न्याय ने ईश्वर को जगत का निमित्त कारण माना है। उसी प्रकार अरस्तू ईश्वर को 'गतिहीन चालक' कहकर जगत का निमित्त कारण मानते हैं।

④ स्वरूप कारण :-

स्वरूप कारण या आकारिक कारण किसी वस्तु का सारतत्व है। इसी से निमित्त कारण उपादान कारण में एक निश्चित दिशा में गति प्रदान करता है। जैसे- घट के निर्माण में कुम्हार के मस्तिष्क में निहित घड़े का आकार ही स्वरूप कारण है।

स्वरूप कारण को सुकरात ने सम्प्रत्यय, प्लेटो ने प्रत्यय एवं अन्य दर्शनों में सामान्य कहा गया है।

⑤ प्रयोजन कारण :-

प्रयोजन / लक्ष्य कारण वह है जिसमें अन्ततः उपादान कारण परिणत होता है या जिस उद्देश्य हेतु निमित्त कारण उपादान कारण में गति प्रदान करता है। जैसे- घट का निर्माण करना ही लक्ष्य कारण है।

आगे अरस्तू ने इन चार कारणों को दो कारणों में ही समाहित कर देते हैं। वे निमित्त, स्वरूप एवं लक्ष्य कारण का समावेश आकारिक कारण में करते हैं। अरस्तू के अनुसार स्वरूप के स्तर पर जो मानसिक है वह लक्ष्य के स्तर पर वास्तविक हो जाता है।

① उपादान कारण
② आकारिक कारण

अरस्तू ने उपादान / सामग्री को सम्भाव्यता एवं आकार को वास्तविकता की संज्ञा दी है। यहाँ कार्य की उत्पत्ति का अर्थ है सम्भाव्यता का वास्तविकता में परिवर्तन। यह सांख्य दर्शन के सत्कार्यवाद के सिद्धान्त के अनुरूप है।